प्रारम्भिक संबोधन

माननीय सदस्यगण,

षोडश बिहार विधान सभा के सप्तम सत्र में मैं आप सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ ।

वर्त्तमान सत्र के दौरान कुल 05 (पाँच) बैठकें निर्धारित हैं, जिसमें वित्तीय वर्ष 2017-18 के प्रथम अनुपूरक व्यय विवरण के व्यवस्थापन् के अलावा राजकीय विधेयक एवं गैर सरकारी संकल्प लिये जाएंगे ।

संसदीय लोकतंत्र में, जनप्रतिनिधियों का यह सदन सर्वोपरि होता है एवं सरकार इसके प्रति उत्तरदायी होती है । इस सदन में प्रतिनिधिगण आपसी विमर्श के माध्यम से जनता की समस्याओं पर विचारण एवं इसका निराकरण करते हैं । इस तरह यह सदन विमर्श का सदन है । अगर इस सदन में सार्थक विमर्श नहीं हो तो इस सदन का महत्त्व हीं कमतर हो जाता है । आप सभी इस बात से अवगत हैं और अनेक पूर्वोदाहरण हैं जब सामाजिक संवेदनशीलता के मुद्दों पर इस सदन ने उल्लेखनीय एकजुटता दिखाई है जिससे महत्त्वपूर्ण जनकल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन हो पाया है । इस परिप्रेक्ष्य में यह लाजिमी है कि हम सभी जनता से जुड़े मुद्दों पर अर्थपूर्ण विमर्श कर उसके निराकरण का प्रयास करें ।

अभी पिछले सदन में भी आप सबों ने जिस आत्मसंयम और अनुशासित ढंग से सदन के संचालन में सहयोग किया इसकी सर्वत्र सराहना हुई है ।

आज बिहार के लगभग 18 जिले बाढ़ की चपेट में हैं । एक करोड़ से उपर की आबादी इससे प्रभावित है । यह हम सबों के लिए चिन्ता का विषय है एवं इस संकट की घड़ी में हम उन तमाम आपदा पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं । हम सब का यह भी दायित्व है कि हम अपनी पूरी क्षमता से बाढ़ पीड़ितों की मदद करें ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि सदन के सफल संचालन में आपका सकारात्मक सहयोग प्राप्त होगा ।

****